टिप्पणी

28

301hi28

जिजीविषा की विजय

अपंगता को हम प्रायः जीवन का अभिशाप मानते हैं। जब हम किसी नेत्रहीन या हाथ-पैर से अपंग व्यक्ति को देखते हैं, हमारा मन दया और सहानुभूति से भर उठता है। क्या आप किसी ऐसे अपंग व्यक्ति से मिले हैं जिसने अपनी शारीरिक अशक्तता को ताक पर रख कर ऐसे कार्य किए, जिनसे उसकी अपंगता का एहसास मिट गया। जीवन में बहुत से लोग हमारे संपर्क में आते हैं, परंतु उनमें कुछ एक लोग ऐसे भी होते हैं, जिनके प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व को हम उनकी विशेषताओं के कारण कभी भूल नहीं पाते। उनकी स्मृति हमारे मानस-पटल पर सदैव उजागर होती रहती है। ऐसे व्यक्तित्व को उचित प्रकार से स्मरण करना ही **'संस्मरण'** है।

आइए, प्रस्तुत पाठ में जिजीविषा और संकल्पशक्ति से जुड़े साहित्यकार और विचारक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व के बारे में पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विकलांगता पर समाज की दृष्टि का विवेचन कर सकेंगे;
- विकलांगता के बावजूद डॉ. रघुवंश के संकल्प और अध्यवसाय पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे;
- शारीरिक अशक्तता के प्रति करुणा, दया और सहानुभूति के स्थान पर सहयोग, अधिकार और समझदारी का महत्त्व बता सकेंगे;
- विकलांगों में आत्मनिर्भरता उत्पन्न करने के गुर बता सकेंगे;
- संस्मरण की भाषा और शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- संस्मरण विधा के स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे तथा उनके आधार पर पाठ की समीक्षा कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

क्या आपके जीवन में कोई ऐसा मित्र, पड़ोसी, सगा-संबंधी या शिक्षक आया जिसने आपके मन पर गहरी छाप छोड़ी हो, उसे भूल पाना संभव न हो। ऐसे किसी व्यक्ति के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

एक जंगल में चार लोग भटक गए। उनमें एक अंधा, एक बहरा, एक लूला और एक लंगड़ा था। अचानक बहरा बोला– 'सब शांत हो जाओ, मुझे तो घोड़ों की टापें सुनाई दे रही हैं।' तभी अंधा बोला, हाँ! कुछ घोड़े आते हुए तो मुझे भी दिखाई दे रहे हैं।'' चारों घनघोर जंगल में डर के मारे काँपने लगे। तभी लूला कहता है, ''तुम सब डरते क्यों हो! आने दो सभी को, हो जाएँगे दो-दो हाथ!'' तभी एक कोने में घुसा हुआ लँगड़ा बोला ''तुम्हीं लोग लड़ना, मैं तो फटाफट भाग लूँगा।''

खैर, यह तो थी मज़ाक की बात! सच्चाई यह है कि विश्व में अनेक ऐसे अपंग व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने अपंगता को अनदेखा कर दुनिया को चकित कर देने वाले कार्य किए और बहुत प्रसिद्धि पाई। नीचे कुछ चित्र दिए जा रहे हैं। क्या आप इन लोगों को पहचानते हैं? इनके नाम और कार्यक्षेत्र का उल्लेख कीजिए

नामः	**नामः**	**नामः**
कार्यक्षेत्रः	**कार्यक्षेत्रः**	**कार्यक्षेत्रः**

क्या आप भी किसी ऐसे व्यक्ति से परिचित हैं तो यहाँ उसके बारे में लिखिए।

....

....

....

....

....

28.1 मूलपाठ

जिजीविषा की विजय

मन में समाहित 'जीवन लालसा' ने ही गोपामऊ (हरदोई) निवासी श्री रामसहाय के घर में जन्मे बालक रघुवंश सहाय वर्मा को हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य डॉ. रघुवंश के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

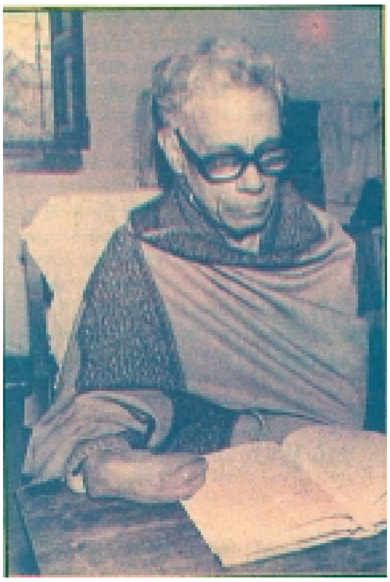

चित्र : डॉ. रघुवंश

मेरी डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम भेंट भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में 1954 में हुई। राम निवास बाग के भव्य हॉल में अधिवेशन संपन्न हो रहा था। मैं तो देखते ही दंग रह गया कि एक व्यक्ति पैर से निरंतर तेज़ी से लिखता जा रहा है। जब वहाँ विद्यमान अन्य विद्वानों से उनका परिचय प्राप्त हुआ तो ज्ञात हुआ कि यह तो वही डॉ. रघुवंश हैं, जिनके विषय में विद्यार्थी जीवन से सुनता आया हूँ, पर यह नहीं मालूम था कि लेखन कार्य में इतना सक्रिय विद्वान दोनों हाथों से लाचार है। तब तक उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. तथा 1948 में ''हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य'' विषय पर डी.फिल्. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। भाई डॉ. रमानाथ सहाय ने बातचीत के दौरान सूचित किया कि वह जब संस्कृत में एम.ए. कर थे तब डॉ. रघुवंश हिंदी में एम.ए. कर चुके थे और संस्कृत की कक्षाओं में उपस्थित रहते थे। उसी विश्वविद्यालय में वह प्राध्यापक बने। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निकटस्थ होने के कारण वह सक्रिय रूप से भारतीय हिंदी परिषद् से जुड़ चुके थे और इसके मंत्री थे। मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघवुंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे। एक व्यक्ति इतना अधिक सक्रिय रह सकता है, यह आश्चर्यचकित करने के लिए पर्याप्त था। साधारणतः परीक्षा में भी ऐसे बालकों को कोई लेखक देने का प्रावधान है पर डॉ. रघुवंश ने अपनी सूझबूझ से ऐसी पद्धति विकसित कर ली थी जो प्रायः देखने को नहीं मिलती है। इस पद्धति से उन्होंने सारी परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

इसमें दो राय नहीं है कि उन्हें प्रेरणा मिली – हिंदी भाषा और साहित्य के प्रकाश स्तम्भ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा से और अभूतपूर्व सहयोग और सहायता मिली डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी से। (संयोग से एलनगंज में डॉ. रघुवंश और डॉ. चतुर्वेदी साथ ही एक घर में निवास करते थे और बैंक रोड स्थित अपना-अपना स्थायी आवास भी पड़ोसी के रूप में बनवाया, जहाँ अब दोनों ही निवास कर रहे हैं।)

शब्दार्थ

जीजिविषा	– जीने की इच्छा
सक्रिय	– क्रियाशील
निकटस्थ	– समीप, करीबी
निरंतर	– लगातार
प्रावधान	– सुविधा
आवास	– घर

लेकिन यह सब तो प्राप्त हुआ इलाहाबाद आने के बाद ही। मैं निरंतर सोचता रहा कि आखिर कौन-सा तत्त्व है, जिससे रघुवंश विपरीत परिस्थितियों में भी आगे ही बढ़ते गए। काफ़ी सोच-विचार के बाद मत बनाया कि हो-न-हो उन्होंने अपने मन में कुछ बनने की ठान ली हो। एक बार दिल्ली में ''मन क्या है'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई थी। देश-विदेश के विद्‌वानों, वैज्ञानिकों ने गंभीर विचार-विमर्श कर मन को परिभाषित करने की चेष्टा की। यह माना गया कि मन-मस्तिष्क नहीं है। वैज्ञानिकों के अनुसार मस्तिष्क शरीर के भीतर एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केंद्र है जिसमें बहुत कुछ घटता रहता है। मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है। मन को विद्‌वानों ने तीन मंजिला भवन-नववल्कल, वत्सल, सर्पिल माना। लगता है, अतींद्रिय अनुभवों के केंद्र मन (सर्पिल) में ही उन्होंने पक्का विचार बना लिया होगा। उन्होंने जो लेखन कार्य किया, वह बहुत से उन विद्‌वानों से भी संभव नहीं हो सका जिन्होंने मज़बूत हाथ लेकर जन्म लिया। मात्र मन की मज़बूती से ही कालांतर में वह सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए। इस समय मुझे महाकवि प्रसाद की पंक्तियाँ स्मरण आ रही हैं :

मन जब निश्चित-सा कर लेता कोई मत है अपना।
बुद्धि-देव-बल से प्रमाण का सतत निरखता सपना।

यह मन ही तो है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है, वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता है। उनका नव उत्साह से भरा मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है। बहुत से लोगों में यह स्वच्छता बाह्‌य रूप में ही मिलती है, पर डॉ. रघुवंश बाह्‌य रूप और आंतरिक रूप में तो स्वच्छ हैं ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी स्वच्छ हैं जो आजकल कम ही दिखाई देता है। किस युक्ति से वह रिक्शा में बैठने से पूर्व उस चालक की देय राशि निकालकर रख लेते हैं, यह विस्मयकारी है जिससे उनको साथ ले जाने वाले व्यक्ति अपने पास से रुपये न दे दें। अर्थ की शुचिता के वह ज्वलंत उदाहरण हैं। उनके रहन-सहन व व्यक्तित्व में जितनी स्वच्छता मिलती है, उसका स्पष्ट प्रभाव उनके द्वारा संपादित कार्यों में परिलक्षित होता है।

यह सब कुछ संभव हो पाने के पीछे उनका मज़बूत मन तो है ही, साथ ही वह संकल्प शक्ति भी है, जो उन्होंने स्वतः ही धारण कर ली थी क्योंकि मन ही तो संकल्पमय होकर सक्रिय हो उठता है। संकल्प ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा है।

डॉ. रघुवंश ने जीवन में जो सर्जना की, वह सब कुछ इसी कारण है क्योंकि सर्जनात्मक, चैतन्य ही तो संकल्प है, फिर सर्जना चाहे किसी भी प्रकार की हो, संकल्प के बिना संभव ही नहीं। संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है, जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं। गुण के रूप में संकल्प ही मन का लक्षण है। मनुष्य मात्र इस संकल्प से ही संचालित होता है। इसको ही शोपेनहावर ने जीने का संकल्प, नीत्शे ने शक्ति संकल्प व विलियम जेम्स ने श्रद्धा का संकल्प बताया है। उसकी कुछ भी व्याख्या करें, संकल्प शक्ति ही मन में जागरित होती है और व्यक्ति के जीवन में नया

शब्दार्थ

चेष्टा – प्रयत्न
चिति – जागृति
संज्ञान – ज्ञान सहित
पर्यवेक्षण – निरीक्षण
समुच्चय – सुगठित
नव – नया
वल्कल – वृक्ष की छाल का कपड़ा
वत्सल – बच्चों से प्रेम करने वाला
सर्पिल – साँप जैसा घुमावदार
अवधान – ध्यान, मनोयोग मन की एकाग्रता
बाह्‌य – बाहरी
देय राशि – देने के लिए धन
विस्मयकारी – आश्चर्यजनक
शुचिता – पवित्रता
संकल्प शक्ति – दृढ़ निश्चय
परिलक्षित – दिखाई देना
सर्जनात्मक – निर्माणकारी
चैतन्य – चेतना, जागृति

प्राण फूँकती है, उसके जीवन को अर्थ देती है। तभी तो मनीषियों ने 'सर्वसंकल्पमूलम्' स्वीकार किया है।

इस संकल्प-शक्ति के कारण ही डॉ. रघुवंश निरंतर लिखते रहे। तंतुजाल, अर्थहीन, छायालय (कथा साहित्य), हरिघाटी (यात्रा संस्मरण), मानस पुत्र ईसा (जीवन), नाट्यकला, साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य आदि कृतियाँ प्रकाशित हुईं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में जो विशिष्ट व्याख्यानमाला के अंतर्गत भाषण दिए, उनको संस्थान ने ही ''समसामयिक हिंदी कविता और आलोचना'' शीर्षक से प्रकाशित किया।

हमेशा उनका व्यक्तित्व सौम्य रहा। व्यक्ति की वृत्ति ही प्रसन्नता का रूप ले लेती है। उसके बाद स्वतः ही सौम्यता झलकती है और चेहरा तेज से दमकता है – प्रसन्नवृत्तिः सौम्यत्वम्।

मैं किसी से कम नहीं हूँ, यह भाव प्रारंभ से ही उनमें विद्यमान रहा। सच्चे अर्थों में वह 'कर्मयोगी' रहे हैं। शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव-नव प्रकाश विकीर्ण होता रहा।

डॉ. रघुवंश को अधिक निकट से देखने का सौभाग्य मुझे 1963 में मिला। इस बार भी भारतीय हिंदी परिषद् का अखिल भारतीय अधिवेशन था।

यह अधिवेशन डॉ. नगेन्द्र की अध्यक्षता में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ। जिसका उद्घाटन महादेवी जी ने किया। परिषद् के विविध क्रियाकलापों से जुड़े होने के कारण डॉ. रघुवंश पर विशेष उत्तरदायित्व था और मैं विश्वविद्यालय में कार्यरत था। उस समय उनकी कार्यपद्धति से अधिक अवगत हुआ।

जो आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करता है, उसकी योग्यता तो उनके कार्यों से प्रकट होती है। यही कारण है कि डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में जब 'हिंदी साहित्य कोश' का निर्माण प्रारंभ हुआ तो डॉ. रघुवंश न केवल संपादक मंडल में रहे वरन् उस परियोजना का संयोजकत्व भी किया। उन्होंने कोश के लिए लेखन-कार्य भी किया। हिंदी 'साहित्य कोश' के प्रकाशन में उनका बड़ा योगदान रहा। किसी भी परियोजना का विकास कर, उसको ऊँचाई तक ले जाना और उसके लिए अपने को न्योछावर करते रहना उनका स्वभाव बन गया। योजकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वह निरंतर आगे बढ़ते ही गए।

समझौतावादी प्रवृत्ति उनमें कभी नहीं रही। अपनी योग्यता और क्षमता के बलबूते पर वह निरंतर अग्रसर हुए और सर्वोच्च पद से अवकाश प्राप्त कर उच्च शिक्षा संस्थान, शिमला में भी प्रतिष्ठित रहे। वहाँ रहते हुए भी उन्होंने अपने प्रतिमान स्थापित किए।

लेखन के साथ-साथ निरंतर संपादन कार्य भी किया। भारतीय हिंदी परिषद् के मुख्यपत्र 'अनुशीलन' का अनेक वर्षों तक संपादन किया।

प्रारंभ से ही वह विद्रोही व जुझारू प्रकृति के रहे। लोहिया जी की विचारधारा से वह प्रभावित रहे। देश में आपात् काल की घोषणा के बाद उन्होंने कारागार से जो पत्राचार किया, वह पत्र-विधा की अभूतपूर्व कृति बन गई और बाद में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक

शब्दार्थ

मनीषियों	– ज्ञानी विद्वान, विचारशील
व्याख्या-माला	– कई व्याख्यान एक के बाद एक होना
समसामयिक	– वर्तमान समय के संदर्भ में
सौम्य	– शीतल, स्निग्ध
कर्मयोगी	– कर्म में लगा व्यक्ति
अप्रत्याशित	– आकस्मिक, जिसकी आशा न रही
विकीर्ण	– फैला हुआ
न्योछावर करते रहना	– पूरी तरह से लगे रहना
योजकता	– मिला हुआ
सर्वोच्च	– सबसे ऊँचा
प्रतिमान	– नमूना, मानक

शब्दार्थ

अन्वेषण की वत्ति	– खोज, खोजी स्वभाव
कारागार	– जेल
अभूतपूर्व	– जो पहले न हुआ हो
संयोजक	– अनोखा, संयोजन करने वाला
भ्रामक	– भ्रम पैदा करने वाला
उन्नति	– प्रगति
अग्रसर	– आगे बढ़ना
अनुकरण	– नकल, पीछे चलना
प्रतिद्वन्द्विता	– मुकाबला करने की अवस्था
वैशिष्ट्य परीक्षण	– परीक्षा लेने की विशेष क्रिया
मार्ग	– रास्ता

से प्रकाशित हुई। इस प्रकार डॉ. रघुवंश 'मन जिसका मजबूत' के जीते-जागते उदाहरण हैं।

डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व का मूल्यांकन अधूरा रह जाएगा यदि उनके विचारक-रूप को न समझा जाए। उनके प्रत्येक आलेख में उनकी मौलिकता तो झाँकती ही है, पर विचारक का रूप सबसे अधिक मुखर हुआ जब विचारों का त्रैमासिक 'क ख ग' उनके प्रयासों से प्रारंभ हुआ। वह इसके संपादक मंडल में भी थे और संयोजक भी थे।

जुलाई 1963 के प्रवेशांक में 'दृष्टिकोण' के अंतर्गत उनका सुविचारित आलेख 'नये राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती' प्रकाशित हुआ जिसके कुछ अंश आज तीन दशक के बाद भी सामयिक होने के कारण उद्धृत करना चाहता हूँ। इसका सार-संक्षेप देने में मूल भाव के ओझल होने का खतरा है, अतएव कुछ उपयोगी अंश इस प्रकार हैं :

''यदि सचमुच एशिया और अफ्रीका को विकसित होना है, तो अपने सभी प्रश्नों को निजी संदर्भ में रखकर देखना होगा। विकास की यह पद्धति मूलतः भ्रामक है कि जिस रेखा में किसी दूसरे देश ने उन्नति की है, उसी रेखा पर आगे बढ़ा जा सकेगा। विकास की रेखा का प्रत्येक बिंदु आगे आने वाले बिंदुओं को अग्रसर करने में सहायक हुआ है, स्वयं पीछे रहकर, पिछड़कर। ऐसी स्थिति में दूसरा व्यक्ति या राष्ट्र अपने विकास के लिए उस रेखा का अनुकरण करना चाहेगा तो वह सदा के लिए अनुवर्ती बना रहेगा, पिछड़ा रहेगा। विकास की प्रतिद्वन्द्विता में, और बिना प्रतिद्वन्द्विता के विकास कभी संभव नहीं होता, सदा अपनी स्वतंत्र रेखा खींचनी होगी। अपना निजी मार्ग बनाना होगा। वह कितना ही छोटा प्रयत्न क्यों न लगे, परंतु एक ओर तो उस रेखा पर हमारी दृष्टि विकसित राष्ट्रों के उच्चतम बिंदु पर रह सकेगी और दूसरी ओर हमारी सर्जनात्मक प्रतिभा को पूर्ण मुक्ति मिल सकेगी। एशिया अथवा अफ्रीका के सभी स्वाधीन देशों को यूरोप की बौद्धिक पराधीनता से मुक्त होकर अपनी निजी प्रतिभा का अन्वेषण करना होगा और अपने निजी वैशिष्ट्य के बिना उनके विकास की संभावना पर विचार किया ही नहीं जा सकता। आर्थिक सहायताओं से अविकसित देशों की आर्थिक नीति, औद्योगिक पद्धति तथा विकास की दिशा निर्धारित हो जाती है। ये देश बिना मौलिक रूप से विकसित हुए ही विकास का अनुभव करने लगे हैं और बिना संतुलित संपन्नता के संपन्नता का आभास पाने लगे हैं।''

चिंतन के दो पक्ष हैं : चिंतन के क्षेत्र में शुद्ध सैद्धांतिक ज्ञान और राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोगों और परीक्षणों की निश्चित योजना। चिंतन के क्षेत्र में निर्दिष्ट अंतर्राष्ट्रीयता के आधार पर आगे बढ़ा जा सकता है, और विज्ञान तथा प्रविधि के क्षेत्र में मौलिक तत्त्वों, सिद्धांतों तथा पद्धतियों के आधार पर अग्रसर हुआ जा सकता है। रूस और जापान ने यही करके दिखा भी दिया है। अपने मौलिक वैशिष्ट्य तथा सर्जनात्मक प्रतिभा के सहारे आगे बढ़ना है, उनके विकास का मार्ग वही भाग होगा।

निष्कर्ष रूप में डॉ. रघुवंश ने इस लंबे आलेख में घोषणा की :

''आज इन नयी स्वाधीनता प्राप्त और विकास की कामना करने वाले राष्ट्रों की सबसे बड़ी माँग होनी चाहिए – बौद्धिक मुक्ति और मौलिक सर्जनशीलता का अवसर।''

टिप्पणी

बौद्धिक जागरूकता के लिए 'क ख ग' का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही। ईमानदारी से सोचने व कहने की शुरूआत इस पत्रिका के माध्यम से हुई जिसका श्रेय डॉ. रघुवंश के विचारक स्वरूप को है।

डॉ. रघुवंश का विचारक रूप निरंतर प्रखर होता गया जिसका दिग्दर्शन उनकी कृति ''मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'' में हुआ। इस कृति में ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से संपृक्त कर व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। हिंसा, प्रतिशोध और स्वार्थ के अंधकार से घिरे आज के विश्व के सामने ईसा का जीवन और दर्शन-दोनों ही प्रकाश की ओर उन्मुख करता है, निश्चय ही भारतीय ज्ञान परंपरा के रंग इससे समानता रखते हैं। मनुष्य जाति के कल्याण और उसके आसपास के मौलिक विश्व की भलाई के लिए उपयुक्त सत्य पाने की ओर प्रयास किया गया है जिसमें अन्वेषण की वृत्ति भी है। यह जीवनी विधा में लिखी गई पुस्तक हमारे समाज के लिए परम उपयोगी है जिस पर धर्म-दर्शन के लिए 1985 का श्री भगवानदास पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा डॉ. रघुवंश को दिया गया। डॉ. रघुवंश को यही सम्मान नहीं मिला, उनको अन्य सम्मान भी मिलते रहे जिनमें से बिड़ला ट्रस्ट द्वारा दिया गया ''शंकर पुरस्कार'' सर्वोच्च है। 1994 में उन्हें उत्तर प्रदेश शासन का प्रतिष्ठित ''भारत भारती पुरस्कार'' प्रदान किया गया। सहाय परिवार में असहाय स्थिति में उत्पन्न होते हुए मन की मज़बूती व संकल्प-शक्ति से वह मूर्द्धन्य स्थान पर प्रतिष्ठित हुए।

शब्दार्थ

विचारक	– विचार करने वाला
प्रखर	– तीव्र बुद्धिवाला
दिग्दर्शन	– दिशा दिखाना
संपृक्त	– डूबा हुआ
उन्मुख	– जिसका मुख उस ओर हो, उत्सुक, तैयार
प्रतिष्ठित	– सम्मान-प्राप्त

– प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया

28.2 बोध प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम भेंट कहाँ हुई
   (क) इलाहाबाद में
   (ख) भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में
   (ग) भारतीय हिंदी परिषद् के अखिल भारतीय अधिवेशन में
   (घ) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में
2. डॉ. रघुवंश अपंग थे क्योंकि –
   (क) उनका एक हाथ नहीं था
   (ख) उनका एक पाँव नहीं था
   (ग) उनके दोनों हाथ लुंज थे पर काम नहीं करते थे
   (घ) वे दृष्टिहीन थे
3. डॉ. रघुवंश अपंग होते हुए भी कैसे लिखते थे –
   (क) दोनों बाँहों में कलम फँसा कर
   (ख) हाथ की मुट्ठी में कलम फँसा कर

(ग) पैर की अँगुली में कलम फँसा कर

(घ) मुँह से कलम पकड़ कर

4. डॉ. रघुवंश ने निम्न विषय पर डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की –

(क) हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य

(ख) हिंदी भाषा और डॉ. नगेन्द्र का साहित्य

(ग) साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य

(घ) मन और मस्तिष्क

5. 'मन क्या है' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कहाँ हुआ?

(क) इलाहाबाद में

(ख) दिल्ली में

(ग) लखनऊ में

(घ) अलीगढ़ में

6. निम्नलिखित वाक्यों में सही शब्द भर कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) डॉ. रघुवंश की प्रेरणा का आधार ———— थे और अभूतपूर्व सहयोग और सहायता का आधार ————।

(ख) डॉ. रघुवंश ने ———— विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया।

(ग) लेखन कार्य के साथ-साथ उन्होंने निरंतर ———— कार्य भी किया और भारतीय हिंदी परिषद् के मुख्यपत्र ———— का अनेक वर्षों तक संपादन किया।

(घ) उनका सुविचारित आलेख ———— आज भी सामयिक होने के कारण प्रसिद्ध है।

(ङ) डॉ. रघुवंश ने ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से संपृक्त कर ———— में व्याख्या प्रस्तुत की।

(च) धर्म दर्शन के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ने उन्हें ———— पुरस्कार से सम्मानित किया।

(छ) बिड़ला ट्रस्ट द्वारा दिया गया ———— पुरस्कार उनकी विशेष उपलब्धि है।

28.3 आइए समझें

प्रिय विद्यार्थियो ! 'जिजीविषा की विजय' पाठ के प्रारंभ में ही आप पढ़ चुके हैं कि यह एक संस्मरण है। हिंदी साहित्य की कई नवीन विधाओं की तरह यह भी एक महत्त्वपूर्ण और रोचक विधा है। इस पाठ को भली-भाँति समझने के लिए आइए, पहले जान लें कि संस्मरण है क्या?

संस्मरण क्या है?

अपनी यादों के आधार पर किसी को याद करना, उसका स्मरण करना ही संस्मरण कहलाता है। ध्यान देने योग्य बात है कि आत्मीयता से जुड़े उस व्यक्तित्व को और उससे जुड़ी विशिष्ट घटनाओं को जब हम घटनाक्रम में बाँधकर उसे आकर्षक संस्मरण चरित्र के रूप में उजागर करते हैं तो साहित्य में वह विधा संस्मरण कहलाती है।

आपको एक बात और बता दें कि जब हम संस्मरण को पढ़ते हैं तो हमें स्थान-स्थान पर शब्दचित्रात्मक अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है। स्थान-स्थान पर शब्दों की इसी चित्रात्मक अभिव्यक्ति होने के कारण कभी–कभी यह रेखाचित्र विधा की झलक भी देने लगता है।

संस्मरण विधा की इस कड़ी में प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया ने जिजीविषा और संकल्प से जुड़े डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व को संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति दी है। लेखक ने डॉ. रघुवंश को अपने स्मृतिपटल पर उभारा है और उस आधार पर संस्मरण की मुख्य विशेषताएँ – संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आई हैं।

जिस प्रकार कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि गद्य साहित्य की विधाएँ हैं, उसी प्रकार संस्मरण भी गद्य साहित्य की नवीन विधा है। इसकी भी कुछ विशेषताएँ हैं, जिन्हें जानना बहुत ज़रूरी है। संस्मरण की प्रमुख विशेषताएँ हैं – परिचित प्रभावपूर्ण व्यक्ति की सत्ता, चरित्र का स्पष्टीकरण, आत्मीयता, तटस्थ दृष्टि और रोचक शैली।

आइए, अब हम यह पढ़ें कि 'जिजीविषा की विजय' रचना में यह विशेषताएँ कितनी और किस प्रकार मिलती हैं।

28.4 संस्मरण विधा की विशेषताओं के आधार पर पाठ की समीक्षा

संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति

आपने पूरा पाठ पढ़ा। लेखक डॉ. रघुवंश के नाम से विद्यार्थी जीवन से परिचित हैं। उनकी डॉ. रघुवंश से पहली भेंट हुई–भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में। डॉ. रघुवंश को देखकर लेखक दंग रह गए कि वे एक पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते जा रहे थे। उन्हें अभी तक यह नहीं पता था कि डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से लाचार हैं। वह उनके व्यक्तित्व से कितने प्रभावित हुए इस अंश से समझा जा सकता है, *"मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे। एक व्यक्ति इतना अधिक सक्रिय रह सकता है, यह आश्चर्य चकित करने के लिए पर्याप्त था।"* लेखक न केवल डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए अपितु उनकी निजी दृष्टि ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि साधारणतया परीक्षा में अपंग बालकों के लिए लेखक देने की सुविधा होती है परंतु डॉ. रघुवंश अकेले निरंतर रिपोर्टिंग का काम कर रहे थे। वास्तव में उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से लेखन की इस

पद्धति को विकसित कर लिया था। डॉ. रघुवंश ने स्वयं आचार्य लोढ़ा को पत्र में लिखा, *''... आज न मेरा दाहिना पैर उठता है, जिसके पंजों के सहारे हज़ारों-हज़ार पृष्ठ लिखता रहा हूँ और न अपनी रीढ़ के सहारे बैठ पाता हूँ।... मैं अपनी लेखन प्रक्रिया में किस प्रकार दाहिनी टाँग और रीढ़ पर जोर डालता रहा हूँ।'* (दिनांक 26.7.05) उनका मन विपरीत स्थितियों में भी उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता था। उन्होंने अपने जीवन में कुछ-न-कुछ बनने की ठान ली थी। यह जानकारी पाठ के इस अंश को पढ़कर मिलती है। ''उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया तथा ''हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य विषय पर डी.फिल्. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। उसी विश्वविद्यालय में वे प्राध्यापक बने।''

इस संदर्भ में डॉ. रघुवंश को समीप से जानने वाले उनके शिष्य डॉ. रामकमल राय ने उनके बारे में उल्लेख किया है, *''इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की एम.ए. की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर उन्होंने सभी को चकित कर दिया। किंतु जब उन्होंने यह संकल्प व्यक्त किया कि वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापन के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं स्वीकार करेंगे तो फिर उनके शुभचिंतकों के सामने एक नई समस्या आ खड़ी हुई। जो व्यक्ति हाथ से खड़िया नहीं पकड़ सकता, श्यामपट्ट पर कुछ लिख नहीं सकता उसे शिक्षक कैसे बनाया जाए? चयन समिति और विश्वविद्यालय की कार्यसमिति में इस बात पर काफी बहस हुई किंतु विजय अंतिम रूप से नैतिकता की ही हुई और रघुवंश जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक हो गए।''*

घटनाओं की सत्यता और चरित्र का स्पष्टीकरण

विद्यार्थियो ! आपके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि संस्मरण में स्मृति के आधार पर हम जिस प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देते हैं उसके जीवन से जुड़ी हुई जिन घटनाओं का हम उल्लेख करते हैं उसमें सच्चाई का होना अत्यंत आवश्यक है। उसमें कल्पना का तत्त्व रंचमात्र भी नहीं होता। घटनाओं के साथ-साथ उस विशिष्ट व्यक्ति का चरित्र भी उभर कर सामने आता है। लीजिए, अब हम इस दृष्टि से देखते हैं कि प्रस्तुत संस्मरण में ये विशेषताएँ किस सीमा तक हैं। आप ऐसी किन्हीं दो सत्य घटनाओं का उल्लेख यहाँ कीजिए–

1. ....

2. ....

विद्यार्थियो ! आपने मूल पाठ पढ़ा। आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि लेखक प्रत्येक घटना के साथ-साथ डॉ. रघुवंश के चरित्र को खोलता चला जाता है। आपने अनुभव किया होगा कि घटनाक्रम के साथ-साथ हम डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का परिचय प्राप्त करते चलते हैं। उदाहरण के लिए – उनके साथ पहली ही भेंट में हमने डॉ. रघुवंश के हाथों से अपंग होने और उनकी कार्यक्षमता, तत्परता, सूझ-बूझ तथा कर्मठ प्रवृत्ति के बारे में पढ़ा। साथ ही यह सूचना भी हमें मिली कि

''उन्होंने जो लेखन कार्य किए, वे बहुत से उन विद्वानों से भी संभव न हो सके जिन्होंने मज़बूत हाथ लेकर जन्म लिया।''

लीजिए एक अन्य घटना के द्वारा हम जानेंगे कि डॉ. रघुवंश बाह्य और आंतरिक रूप में तो स्वच्छ थे ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी उनमें शुचिता दिखाई देती थी। आइए यह उदाहरण देखें, *''किस युक्ति से वह रिक्शा में बैठने से पूर्व उस चालक की देय राशि निकाल कर रख लेते हैं, यह विस्मयकारी है जिससे उनको साथ ले जाने वाले व्यक्ति अपने पास से रुपए न दे दें।''* विद्यार्थियो ! आप जैसे-जैसे पाठ पढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे डॉ. रघुवंश का चरित्र उजागर होता जाता है। उनकी संकल्पशक्ति, सौम्य व्यक्तित्व, कर्मयोगी प्रवृत्ति, आत्मविश्वासपूर्ण कार्य करने की क्षमता, आगे बढ़ने की योग्यता, विद्रोही और जुझारू प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखाई देती हैं। इसी प्रकार आप पाठ पढ़ते-पढ़ते डॉ. रघुवंश के चरित्र की अन्य विशेषताएँ प्रकट कर सकते हैं। डॉ. रघुवंश के चरित्र की किन्हीं अन्य दो विशेषताएँ आप यहाँ लिखिए:

1. ....

2. ....

आत्मीयता तथा तटस्थ दृष्टि

विद्यार्थियो ! यहाँ पहले यह जानना ज़रूरी है कि आत्मीयता तथा तटस्थ दृष्टि से क्या तात्पर्य है। अभी तक आप यह जान चुके हैं कि संस्मरण में अनुभूत स्मृतियाँ सँजोई जाती हैं और उसमें कल्पना का स्थान ही नहीं होता है। परिचित व्यक्ति से जुड़ी अनुभूतियों में निजी दृष्टि प्रधान होती है। परंतु साथ ही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि संस्मरण अतीत से जुड़ा होता है। आत्मीयता यानि अपनापन, निजता संस्मरण का मूल आधार है। तटस्थ दृष्टि से विशिष्ट व्यक्ति का विश्लेषण करना संस्मरण की विशेषता है।

प्रस्तुत संस्मरण में हम यह पाते हैं कि लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हैं और अपनी स्मृतियों के आधार पर अनुभूत सत्यों और घटनाओं को प्रकट करते हुए वे उनके चरित्र को खोलते चले जाते हैं। एक-एक करके उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से जुड़ी विशेषताएँ प्रकट होती चलती हैं। लेखक उनके कृतित्व को समसामयिक परिवेश के साथ जोड़ते चलते हैं। उदाहरण के लिए – उन्होंने डॉ. रघुवंश के आलेख 'नए राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती' के उस अंश को उभारा है जो आज तीन दशक के बाद भी सामयिक है। ''यदि सचमुच एशिया और अफ्रीका को विकसित होना है, तो अपने सभी प्रश्नों को निजी संदर्भ में रखकर देखना होगा। विकास की यह पद्धति मूलतः भ्रामक है कि जिस रेखा में किसी दूसरे देश ने उन्नति की है, उसी रेखा पर आगे बढ़ा जा सकेगा। विकास की रेखा का प्रत्येक बिंदु आगे आने वाले बिंदुओं को अग्रसर करने में सहायक हुआ है, स्वयं पीछे रहकर, पिछड़कर। ऐसी स्थिति में दूसरा व्यक्ति या राष्ट्र अपने विकास के लिए उस रेखा का अनुकरण करना चाहेगा तो वह सदा के

लिए अनुवर्ती बना रहेगा, पिछड़ा रहेगा। विकास की प्रतिद्वन्द्विता में, और बिना प्रतिद्वन्द्विता के विकास कभी संभव नहीं होता, सदा अपनी स्वतंत्र रेखा खींचनी होगी।

डॉ. रघुवंश और उनका कृतित्व

- डॉ. रघुवंश ने अनुशीलन पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया।
- अभूतपूर्व कृति के रूप में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक से पत्रों का संग्रह प्रकाशित हुआ।
- डॉ. रघुवंश एक विचारक के रूप में अधिक मुखर रूप में त्रैमासिक पत्रिका – 'क ख ग' से सभी के सामने आए। उन्होंने इस पत्रिका का संयोजन किया तथा संपादक मंडल में भी प्रमुख भूमिका निभाई।
- ''मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'' कृति द्वारा डॉ. रघुवंश का प्रखर विचारक रूप निखर कर आया। जिसके लिए उन्हें सन् 1985 में श्री भगवान दास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अन्य अनेक सम्मानों में बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रतिष्ठित 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

यह सभी कुछ उन्होंने मज़बूत मन और दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा प्राप्त किया।

लेखक की तटस्थ दृष्टि ही डॉ. रघुवंश द्वारा रचित जीवनी 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' की उस दृष्टि को उभारती है जिसमें हिंसा, प्रतिशोध और स्वार्थ के अंधकार में घिरा वर्तमान विश्व का वातावरण ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से जोड़ कर देखता है। ईसा का जीवन और दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा से मेल खाते हैं।

रोचक भाषा-शैली

संस्मरण परिचित व्यक्ति के जीवन से जुड़ी घटनाओं की सत्य अभिव्यक्ति होता है। इसलिए संस्मरण में स्वाभाविकता, सरलता व रोचकता के साथ-साथ वर्णनात्मक शैली भी होती है। प्रस्तुत संस्मरण सरल भाषा में लिखा गया है, जिसमें रोचकता का गुण विशेष रूप से विद्यमान है। जैसे-जैसे आप पाठ पढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे आपकी रुचि डॉ. रघुवंश को जानने के लिए बढ़ती चली जाती है। घटनाओं में वर्णनात्मकता के साथ-साथ कौतूहल और रुचि दोनों का समावेश है। आपने पढ़ा लेखक ने कितने अच्छे ढंग से 'मन' का विश्लेषण किया है। मन की व्याख्या जहाँ आपको एक नई दृष्टि देती है वहाँ दूसरी तरफ़ डॉ. रघुवंश के सुदृढ़ मन से भी परिचित कराती है। लेखक की भाषा सरल परंतु शुद्ध साहित्यिक भाषा है। तटस्थ, निकटस्थ, संगोष्ठी, पर्यवेक्षण अभिक्रिया, समुच्चय, नव-वल्कल, शुचिता, परिलक्षित, सर्जनात्मक, चैतन्य, बौद्धिक, प्रतिद्वन्द्विता जैसे शुद्ध साहित्यिक शब्द संस्मरण को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

भावात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक शैली के संयोजन से यह संस्मरण बहुत ही प्रभावपूर्ण बन पाया है।

- **भावात्मक शैली**

  ''मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे।''

  ''मैं निरंतर सोचता रहा कि आखिर कौन-सा तत्त्व है, कारण है जिससे रघुवंश विपरीत परिस्थितियों में भी आगे ही बढ़ते गए।''

- **सहज-सरल भाषा**

  ''यह मन ही तो है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता है। उनका नव उत्साह से भरा मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है।''

- **विषय के अनुसार गंभीर परंतु बोधगम्य भाषा**

  ''देश-विदेश के विद्वानों-वैज्ञानिकों ने गंभीर विचार-विमर्श कर 'मन' को परिभाषित करने की चेष्टा की। मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है। कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।''

- **पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग**

  आप जानते हैं 'विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट संदर्भ में निश्चित संकल्पनाओं को खोलने वाले शब्द ही पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। यहाँ 'मन' की बात विस्तार से हुई है तो तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग दर्शनीय है: *''मन को विद्वानों ने तीन मंजिला भवन – नववल्कल, वत्सल और सर्पिल माना''*।

- मानक वर्तनी का प्रयोग आपने ध्यान दिया होगा पूरे पाठ में गद्य, शुद्ध, बुद्धि, औद्योगिक आदि शब्दों में संयुक्त शब्द तोड़ कर लिखे गए हैं। मानक भाषा वर्तनी के यही रूप स्वीकार्य हैं। इस प्रकार के अन्य शब्द चुनकर मानक और अमानक शब्दों की एक सूची तैयार कीजिए।

अतः हम कह सकते हैं कि 'जिजीविषा की विजय', संस्मरण में वे सभी विशेषताएँ हैं जो एक अच्छे संस्मरण में होनी चाहिए। इस प्रकार किसी भी पाठक के मन पर संस्मरण के रूप में यह पाठ समग्र प्रभाव डालता है।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. निम्नलिखित कथनों में सही के सामने (√) तथा गलत के आगे (X) का निशान लगाइए:

   (क) संस्मरण गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में समाहित है। ( )

   (ख) कहानी, नाटक और उपन्यास भी गद्य साहित्य की नवीन विधाएँ ही हैं। ( )

(ग) संस्मरण लेखन में कल्पना जगत की ऊँची उड़ान भरने की पूरी छूट है। ( )

(घ) सत्यता, तटस्थता और आत्मीयता अच्छे संस्मरण की विशेषताएँ हैं।( )

(ङ) डॉ. रघुवंश ने 'अनुशीलन' पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया।( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो शब्दों अथवा वाक्यों में दीजिए:

(क) डॉ. रघुवंश ने किस त्रैमासिक पत्रिका का संपादन कार्य किया?

(ख) डॉ. रघुवंश को सन् 1985 में किस कृति के लिए कौन से पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

(ग) शुद्ध साहित्यिक भाषा के कोई दो उदाहरण मूलपाठ से छाँट कर लिखिए।

(घ) मूलपाठ से कोई दो पारिभाषिक शब्द चुनकर लिखिए।

28.5 प्रमुख व्याख्याएँ

अब आपने पूरा पाठ पढ़ लिया है और संस्मरण की विशेषताओं से भी आप परिचित हो गए हैं। आइए, पाठ में आए कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या पढ़-समझ लेते हैं –

अंश - 1

साधारणतः परीक्षा में भी ऐसे बालकों को कोई लेखक देने का प्रावधान है पर डॉ. रघुवंश ने अपनी सूझबूझ से ऐसी पद्धति विकसित कर ली थी जो प्रायः देखने को नहीं मिलती है। इस पद्धति से उन्होंने सारी परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

संदर्भ

यह गद्यांश प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया द्वारा रचित 'जिजीविषा की विजय' नामक संस्मरण में से लिया गया है।

प्रसंग

लेखक भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में गए थे, जहाँ उनकी भेंट डॉ. रघुवंश से पहली बार हुई और वे डॉ. रघुवंश को पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते देख कर दंग रह गए। इन पंक्तियों में अपंग होते हुए भी डॉ. रघुवंश की तीव्र कार्यक्षमता को प्रकट किया गया है।

व्याख्या

भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में रिपोर्टिंग का कार्य डॉ. रघुवंश कर रहे थे। डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से अपंग थे, किसी भी हाथ में कलम नहीं पकड़ सकते थे। उनके कार्य में कहीं भी अक्षमता का बोध नहीं हो रहा था, वे बड़ी तीव्रता से पैर की उँगलियों में कलम फँसाकर रिपोर्टिंग का कार्य कर रहे थे। लेखक को बहुत ही आश्चर्य हो रहा था कि अपंग होने के बावजूद भी एक व्यक्ति इतनी अधिक सक्रियता से कार्य कर सकता है। प्रायः ऐसा होता है कि यदि कोई बालक अपंग हो तो परीक्षा में लेखन कार्य करने के लिए लेखक नियुक्त किया जाता है, ताकि परीक्षा में उसे कोई व्यवधान न हो।

परंतु डॉ. रघुवंश ने अपने हाथों के न होने को अपनी कमजोरी या अक्षमता नहीं माना था। उन्होंने अपनी व्यावहारिक योग्यता से पैरों से ही लिखने का अभ्यास किया और इसी प्रक्रिया के माध्यम से सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। उन्होंने मन में जो निश्चय किया उसे अपनी बुद्धि के धरातल पर स्थापित कर पूर्ण किया।

अंश – 2

मन को विद्वानों ने तीन मंजिला भवन-नववल्कल, वत्सल, सर्पिल माना। लगता है, अतींद्रिय अनुभवों के केंद्र मन (सर्पिल) में ही उन्होंने पक्का विचार बना लिया होगा।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम हुई भेंट में उनकी अपंगता का ज्ञान हुआ और साथ ही उनके ज़िंदादिल, कर्मठ व्यक्तित्व का साक्षात्कार भी हुआ। तब से वह निरंतर यह सोचा करते थे कि आखिर वह कौन-सा तत्त्व है जो डॉ. रघुवंश को विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। काफी सोच-विचार कर उन्होंने यह मत बनाया कि निश्चित रूप से डॉ. रघुवंश के मन के कुछ बनने का दृढ़ निश्चयी भाव था। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक मन के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए डॉ. रघुवंश के दृढ़ व्यक्तित्व को उजागर कर रहे हैं।

व्याख्या :

इस अनुच्छेद में लेखक ने 'मन क्या है' विषय पर हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि मन और मस्तिष्क में अंतर है। मस्तिष्क में अनगिनत चेतना की तरंग उठती रहती हैं और मन उन तरंगों का समुच्चय (संगठन) है। विद्वान मन को तीन मंजिले भवन की भाँति मानते हैं जिनमें भाव तरंगें उठती हैं और संवेगात्मक प्रक्रिया में विकसित होती हैं, फिर क्रियात्मक रूप धारण करती हैं। डॉ. रघुवंश ने अपनी अपंगता को संवेगात्मक सशक्तता प्रदान की और मन में सुदृढ़ता से यह निश्चय किया कि यह अपंगता उनके जीवन के किसी कार्य में बाधक नहीं होगी और जीवन भर, उनके मन की सुदृढ़ता कायम रही और वे हर क्षेत्र में आगे बढ़े। उन्होंने निश्चित रूप से मन की गहराई में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि जीवन में सफल होना ही है चाहे जैसी भी परिस्थितियाँ आड़े आएँ। जिसका मन मज़बूत होता है, उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

अंश - 3

अर्थ की शुचिता के वे ज्वलंत उदाहरण हैं। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की सुदृढ़ता के साथ-साथ उनके स्वभाव की निश्छलता, आत्मसम्मान का भाव और पवित्रता को प्रस्तुत पंक्ति में अभिव्यक्त कर रहे हैं।

टिप्पणी

व्याख्या

डॉ. रघुवंश के मन में निरंतर आगे बढ़ने की इच्छा थी। जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित था। उनका मन सदैव नई प्रेरणा और उत्साह के साथ कार्य करने की ओर अग्रसर रहता था। लेखन के प्रति उनकी समर्पित भावना थी। उनका स्वभाव बहुत ही पवित्र और निर्मल था। उनकी यह पवित्रता उनके रहन-सहन, व्यक्तित्व तथा हर कार्य-व्यापार में दृष्टिगत होती थी। जिसका प्रभाव उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है। उक्त पंक्तियों को विशेष रूप से अर्थ की पवित्रता के संदर्भ में लेखक ने कहा है। डॉ. रघुवंश अर्थ के मामले में कभी भी किसी की दया या एहसान लेने को राज़ी नहीं थे। वे रिक्शे में भी जाते तो रिक्शे वाले को देने वाली रकम न जाने किस ढंग से पहले ही निकाल कर रख लेते थे। इसीलिए लेखक ने डॉ. रघुवंश को अर्थ की शुचिता का ज्वलंत उदाहरण माना है।

अंश – 4

संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग – इस गद्यांश में लेखक डॉ. रघुवंश के जीवन की हर कार्य प्रवृत्ति के मूल में उनके मन की संकल्पमय सक्रियता को उजागर कर रहे हैं।

व्याख्या – संकल्प शक्ति जीवन का सुदृढ़ आधार है जो मनुष्य के मन की इच्छाओं व विचारों को सुनिश्चित गतिशीलता व सशक्तता प्रदान करती है। संकल्पशक्ति मनुष्य की प्रतिष्ठा का मूल मंत्र है। डॉ. रघुवंश के संदर्भ में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन में जो सर्जनात्मक कार्य किए उनका आधार सुदृढ़ संकल्प चेतना है। इसी वैचारिक चिंतनशील संकल्पपूर्ण इच्छाशक्ति ने उन्हें निरंतर लेखन कार्य की ओर प्रेरित किया और वे एक सच्चे 'कर्मयोगी' के रूप में कार्यरत रहे।

अंश – 5

जो आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करता है, उसकी योग्यता तो उनके कार्यों से प्रकट होती है। यही कारण है कि डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में जब 'हिंदी साहित्य कोश' का निर्माण प्रारंभ हुआ तो डॉ. रघुवंश न केवल संपादक मंडल में रहे वरन् उस परियोजना का संयोजकत्व भी किया। उन्होंने कोश के लिए लेखन-कार्य भी किया। हिंदी 'साहित्य कोश' के प्रकाशन में उनका बड़ा योगदान रहा। किसी भी परियोजना का विकास कर, उसको ऊँचाई तक ले जाना और उसके लिए अपने को न्योछावर करते रहना उनका स्वभाव बन गया। योजकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वह निरंतर आगे बढ़ते ही गए।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग – इस गद्यांश में लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की अन्य विशेषताओं को उजागर करने के साथ-साथ उनके कृतित्व को भी स्पष्ट कर रहे हैं –

टिप्पणी

व्याख्या – डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वह हर कार्य आत्मविश्वासपूर्ण ढंग से करते थे, जिससे उनकी योग्यता और कार्यकुशलता दोनों का ही परिचय मिलता था। ''हिंदी साहित्य कोश'' का निर्माण कार्य आरंभ हुआ तब डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इस कार्य का निर्देशन कर रहे थे। डॉ. रघुवंश ने इस कार्य के लिए न केवल संपादक का कार्य किया अपितु कार्य संयोजन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, साथ ही कोश के लिए लेखन कार्य भी किया। यह तीनों कार्य साधारण नहीं थे। उनके असाधारण सहयोग से 'साहित्य कोश' का प्रकाशन कार्य संभव हुआ। उनके भीतर कार्य करने की लगन थी, अपने ऊपर पूरा विश्वास था। पूरी कर्त्तव्य निष्ठा से कार्य करना, उस कार्य को ऊँचाई तक ले जाना, काम के लिए मर मिटना, खुद को न्योछावर कर देना, आत्मविश्वास पूर्वक कार्य करना उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। वास्तव में कहा जाए तो कार्य के प्रति उनमें आत्मसमर्पण का भाव था। इन्हीं अनेक गुणों के कारण आपने जीवन में सफलता पाई और आगे ही आगे बढ़ते चले गए।

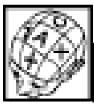

28.6 आपने क्या सीखा

1. मन में समाहित 'जीवन की लालसा' मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है।
2. अपंगता जीवन की गतिशीलता में बाधक नहीं हो सकती, डॉ. रघुवंश इसके साक्षात उदाहरण हैं।
3. डॉ. रघुवंश के जीवन जीने का ढंग यह सिद्ध करता है कि अपंग लोगों को दया व सहानुभूति के स्थान पर अपनत्व और सहयोग चाहिए।
4. मन की सुदृढ़ता और संकल्प शक्ति ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार है, डॉ. रघुवंश इसी संकल्प-शक्ति के कारण निरंतर लिखते रहे और सफलता की ऊँचाइयों को छूते रहे। डॉ. रघुवंश में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है।
5. डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व उनकी जिजीविषा शक्ति और कार्यक्षमता की चरम परिणति में योजकता, अर्थ की शुचिता, आत्मबल, कर्त्तव्य निष्ठा, क्षमता के गुण समाहित हैं।
6. गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में संस्मरण एक जीवंत और रोचक विधा है।
7. संस्मरण की विशेषताएँ हैं – आत्मीयता, स्मरणभाव, सत्यता, लेखक की निजी दृष्टि की प्रधानता, तटस्थ दृष्टि, परिचित व्यक्ति का अपने दृष्टिकोण से विश्लेषण। संस्मरण की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर यह रचना खरी उतरती है। संस्मरण की भाषा-शैली सरल, रोचक, भावात्मक, प्रवाहमान तथा आत्मीयतापूर्ण है।
8. डॉ. रघुवंश की प्रमुख कृति है – मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन। इसके द्वारा उनका विचारक रूप प्रखर होकर निखरा।
9. उन्हें 'भारत भारती सम्मान', बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार', 'श्री भगवान दास पुरस्कार' से समय-समय पर सम्मानित किया गया।

28.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी से सेवा निवृत्त हुए। वहाँ वे 'हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाएँ' विभाग के विभागाध्यक्ष थे। अनेक संस्थाओं तथा भारत सरकार की विविध समितियों में भाषा विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत। भाषा विज्ञान तथा हिंदी भाषा के विविध पक्षों पर अनुसंधान के साथ गद्य साहित्य की नवीन विधाओं की ओर प्रवृत्त। आगरा तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से संबद्ध। वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन के पूर्व निदेशक।

प्रमुख रचनाएँ: अखिल भारतीय प्रशासनिक कोश, अंग्रेज़ी-हिंदी अभिव्यक्ति कोश, अंग्रेज़ी हिंदी शब्दों का ठीक प्रयोग, हिंदी भाषा शिक्षण, भारतीय भाषाएँ, विधा-विविधा, प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, व्यावहारिक हिंदी, अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग, भाषा-भूगोल, संक्षेपण और पल्लवन आदि 35 से अधिक प्रकाशित पुस्तकें।

लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ इंडिया के **'सील आफ़ आनर'** साहित्य वाचस्पति, नातालि पुरस्कार से सम्मानित, महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान से अलंकृत।

(ख) संस्मरण गद्य साहित्य की एक सशक्त विधा है। इस विधा का आरंभ भारतेंदु युग से हुआ। हिंदी में अनेक संस्मरण लिखे जा चुके हैं। आपकी जानकारी के लिए कुछ नाम दिए जा रहे हैं –

'दीप जले शंख बजे'	–	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
'गांधी : कुछ स्मृतियाँ'	–	जैनेन्द्र कुमार
'जिन्हें भूल न सका'	–	रामनारायण उपाध्याय
'आत्मनेपद'	–	अज्ञेय
'उजाले अपनी यादों के'	–	भगवानसिंह
'बच्चन निकट से'	–	अजित कुमार
'मेरे हमदम मेरा दोस्त'	–	कमलेश्वर
'यादों की तीर्थयात्रा'	–	विष्णु प्रभाकर
'युगपुरुष'	–	रामेश्वर शुक्ल अंचल
'याद हो कि न याद हो'	–	काशीनाथ सिंह

(ग) भारत के राष्ट्रपति ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देश के हज़ार विकलांग बच्चों से ख़ास मुलाकात की और अपने अनुभवों को 'अदम्य साहस' नामक कृति में सँजोया। इस कृति में एक स्थान पर लिखा है, *''विकलांगता का भाव तो इनसान के दिमाग़ में होता है। निर्मल और तेजस्वी दिमाग वाला व्यक्ति एक मूल्यवान नागरिक होता है भले ही वह शारीरिक रूप से विकलांग हो।''*

(घ) हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले डॉ. गोपाल राय ने अपंग होते हुए भी

सफलता की बुंलदियों को चूमा है। इस पाठ्यक्रम में आप 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास पढ़ेंगे जिसका संक्षेपण और पाठ लेखन का कार्य उन्होंने ही किया है। हिंदी-उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक तथा 'महाभारत' धारावाहिक के संवाद लेखन के लिए प्रसिद्ध डॉ. राही मासूम रज़ा ने अपाहिज होते हुए भी तीन सौ से ज़्यादा फिल्मों की पटकथा लिखीं और ''आधा गाँव'' जैसा उपन्यास साहित्य जगत को दिया।

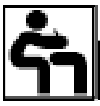

28.8 पाठांत प्रश्न

1. संस्मरण की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. पाठ में से उन दो अंशों का चयन कीजिए, जब लेखक की डॉ. रघुवंश से भेंट हुई।
3. डॉ. रघुवंश को देखकर लेखक के दंग रह जाने का कारण स्पष्ट कीजिए।
4. डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से लाचार थे फिर भी वह कैसे लिखते थे ?
5. मन क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
6. लेखक ने डॉ. रघुवंश को 'कर्मयोगी' क्यों कहा है ?
7. डॉ. रघुवंश में समझौतावादी प्रवृत्ति कभी नहीं रही। इसकी पुष्टि हेतु उदाहरण दीजिए।
8. उनका विचारक रूप सबसे अधिक मुखर कब हुआ ?
9. 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' में डॉ. रघुवंश द्वारा व्याख्यायित मुख्य विचारों को प्रकट कीजिए।
10. 'डॉ. रघुवंश का बाह्य और आंतरिक रूप तो स्वच्छ था ही, अर्थ संबंधी शुचिता भी उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलती है,' इसका एक उदाहरण दीजिए।
11. डॉ. रघुवंश के लेखन कार्य पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
12. डॉ. रघुवंश की विद्रोही और जुझारू प्रकृति को अपने शब्दों में लिखिए।
13. निम्नलिखित अंशों की व्याख्या कीजिए :

(क) मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।

(ख) शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव-नव प्रकाश विकीर्ण होता रहा।

14. निम्नलिखित शब्दों की मानक वर्तनी लिखिए:
    सम्पादन, चट्टान, पद्य, पद्धति, उद्धरण, विद्यार्थी

28.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)

6. (क) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

(ख) इलाहाबाद,

(ग) संपादन, अनुशीलन।

(घ) 'नये राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती।'

(ङ) 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'

(च) श्री भगवानदास पुरस्कार

(छ) शंकर

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 1. (क) √ (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) √

2. (क) 'क ख ग',

(ख) **कृतिः** मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन,

पुरस्कारः श्री भगवानदास पुरस्कार

(ग) स्वयं कीजिए

(घ) स्वयं कीजिए